किताब कैमरा है कि आँख*

शिवरतन थानवी

किताबों का हर आदमी की ज़िंदगी में एक सुनिश्चित योगदान होता है। बहुत बार ऐसा हुआ जब किसी किताब ने किसी के जीवन की दिशा मोड़ दी है। पाठक जानते हैं कि गीता ने गांधी जी को नया मार्ग दिखाया था और फिर जॉन रस्किन की किताब 'अन टू दिस लास्ट' ने तो उनका जीवन ही बदल दिया था। इसी किताब की बदौलत महात्मा जी नयी राह पकड़ पाए थे और मोहन से महात्मा बन गए थे। भाईसाहब शिवरतन जी का एक विचारपरख लेख जो हमें कई किताबों से जोड़ देता है। उन्हें उन किताबों से जो मिला उसका भी खुलासा करता है साथ ही हमें उन किताबों पढ़ने की प्रेरणा देता हुआ भी चलता है। आज जब सामान्य जीवन-शैली में हर आदमी से किताबों का साथ छूट गया है तब ऐसे किसी लेख का सामने आना ही एक वरदान सिद्ध हो सकता है। पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है एक अनन्य एवं अप्रतिम लेख। पाठक कृपया पढ़कर अपने विचारों से हमें अवगत कराएँ

किताब न तो शून्य में रहती है और न ही शून्य में जन्म लेती है। वह जीवन के प्रत्येक पहलू से जुड़ी रहती है। हर किताब हमारे जीवन को आगे-पीछे ले जाने में अत्यंत मूल्यवान भूमिका अदा करती है। छोटी हो या बड़ी, रद्दी हो या अच्छी, जो भी पुस्तक हम पढ़ते है वह कहीं-न-कहीं हमारे हृदय और मस्तिष्क को कुछ-न-कुछ तो हिलाती ही है। आगे बढ़ाए तो हमारा सौभाग्य, पीछे ले जाए तो हमारा दुर्भाग्य।

भाग्य पर विश्वास करना, तटस्थ भाव से केवल चालू मुहावरे के रूप में ही कभी-कभी उसका प्रयोग कर देना, यह दो अलग बातें हैं। इनमें भेद करना भी किताब सिखाती है। इसे हम विवेक कहते हैं, ज्ञान कहते हैं, प्रगति और उपलब्धि कहते हैं।

शिक्षक और पुस्तक-प्रेमी पिता का पुत्र मैं भी उनके समान शिक्षक और पुस्तक-प्रेमी बना। जीवन भर अच्छा शिक्षक बनने की कोशिश की और शिक्षा व साहित्य संबंधी उत्तमोत्तम किताबों की खोज में लगा रहा, पढ़ता रहा। कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना, नाटक और बाल- साहित्य भी हिंदी-अँग्रेज़ी-बांग्ला एवं गुजराती के जो मिले सो पढ़े। विचलन यह हुआ कि विशेषता किसी में भी प्राप्त नहीं की न शिक्षाविद् बना न साहित्यकार। कविता लिखी, कहानी लिखी, बाल-साहित्य लिखा व शैक्षिक

* *अनौपचारिक पत्रिका* (राजस्थान प्रौढ़ शिक्षा समिति द्वारा प्रकाशित), सितंबर 2011 से साभार।

लेखन भी किया और पत्र-पत्रिकाओं में भी छपा, पर किसी एक पर टिका नहीं। चित्रकला, फ़ोटोग्राफ़ी,धर्म, दर्शन, विज्ञान, राजनीति, अर्थशास्त्र आदि कई विषय थोड़े-थोड़े पढ़े शायद भीतर कहीं एक पत्रकार गंभीर वैचारिक पत्रकार के रूप में प्रबल हो रहा था और अंततः वह पक्का पत्रकार बना। कच्चा पत्रकार तो 1951 से था, जब 'ज्वाला' साप्ताहिक में पार्ट टाइम कार्य प्रारंभ किया, पक्का बना 1965 में जब **शिविर पत्रिका** (मासिक) की नींव डाली-और **नया शिक्षक** (त्रैमासिक) का कायाकल्प किया, सच्चे शिक्षा प्रेमी शिक्षा प्रशासक **अनिल बोर्दिया** की शक्ति और प्रेरणा से! तेरह वर्ष दो शैक्षिक पत्रिकाओं का पूर्णकालिक संपादन किया। और पढ़ता रहा। पढ़ रहा हूँ। पढ़ना ही मेरा जीवन है।

मेरे पास जीवन भी है और जीवन देने वाली किताबें भी हैं और इन किताबों से जुड़ी कई कहानियाँ भी हैं। हर पाठक के पास कोई-न-कोई कहानी होती है। मेरे पास भी कई हैं। कुछ सुनाऊँगा। आप उकताएँगे नहीं क्योंकि आप भी पुस्तक-प्रेमी हैं, पाठक हैं, और इस नाते आपका-हमारा घनघोर तादात्म्य है। आपके पास भी किताबों की कई कहानियाँ होंगी साम्य चाहे न हो, उसका तादात्म्य तो होगीं ही, हैं न?

कालक्रम की चिंता किए बिना पहली कहानी मैं सन् 54-55 की लेता हूँ। जोधपुर में मैं पढ़ता भी था, पढ़ाता भी था, एक साप्ताहिक का संपादन भी करता था, एक गांधीवादी साहित्यिक संस्था का साहित्य मंत्री और फिर अध्यक्ष भी बना था तथा सामाजिक-राजनीतिक चेतना में रूचि के कारण कई साम्यवादी लेखकों-कवियों की संगत भी करता था। जोधपुर आए **नंबूदरीपाद** को भी सुना और उनकी बाद में साहित्य और कला संबंधी किताब भी पढ़ी जो मेरे निजी पुस्तकालय में सुरक्षित है। **वेदों में साम्यवाद** पर **डांगे** की किताब भी पढ़ी, खरीदी पर अभी नजर नहीं आ रही। अँग्रेज़ी-हिंदी लेखक-कवि प्राध्यापकों का पट्ट शिष्य बना। बी.ए. में हिंदी साहित्य और एम.ए में अँग्रेज़ी साहित्य पढ़ा, **प्रेमचंद** और **यशपाल** को खूब गहराई से पढ़ा। **यशपाल** जोधपुर आए तो उनका साक्षात्कार और **रांगेय राघव** जयपुर आए तो उनका साक्षात्कार **'ज्वाला'** साप्ताहिक में छापा। **कोमल कोठरी, विजयदान देथा, मन्नू भंडारी, प्रयोग मेहता** आदि के साथ **प्रेमचंद** के गहरे अध्ययन में जुटा और हम सबने मिलकर **विजयदान देथा 'बिज्जी'** के संपादन में साहित्यिक पत्रिका **'प्रेरणा'** का **'प्रेमचंद के पात्र'** विशेषांक निकाला जो बाद में इसी नाम से अक्षर प्रकाशन से प्रकाशित हुआ और अभी हाल ही में **'बिज्जी' (विजयदान देथा)** की लंबी भूमिका के साथ **'प्रेमचंद की बस्ती'** नाम से पुनः प्रकाशित हुआ है। मेरा उसमें लेख है। **'लाला समरकांत'** पर। **'बिज्जी'** की **'बातां री फुलवारी'** के 14 भाग हैं, कई भाग मैंने पढ़ें हैं। हिंदी-राजस्थानी में उनके कई कहानी-संग्रह और उपन्यास पढ़ें हैं।

यह तो हुई साहित्यिक पठन-लेखन की कहानी। लेकिन इसी क्रम की एक दूसरी कहानी ऐसी है जो मुझे इतना सुख और इतना दुख देती है कि वह भी एक मर्मांतक कहानी बन जाती है। मैंने **यशपाल** की सन् 54 तक प्रकाशित सभी पुस्तकें पढ़ डाली थीं। **'लोहे की दीवार**

के दोनों ओर', 'राह बीती' तथा **'देखा, सोचा और समझा'** बहुत बार पढ़ी थी। उन दिनों तक पढ़े **यशपाल** के कथा-साहित्य पर मैंने एक लंबा लेख लिख डाला। वह लेख **'नया पथ'** में भेज दिया। सोचा था **शिव वर्मा** प्रगतिशील लेखक-संपादक व पुराने क्रांतिकारी हैं, ज़रूर पसंद करेंगे। लेकिन उनके अपने हाथ से लिखे पत्र के साथ लेख लौट आया। उन्होंने लिखा था कि लेख अच्छा है, थोड़ा और पुनर्लेखन हो जाए तो और अच्छा बन जाएगा। कितनी बारीकी से उन्होंने उसे पढ़ा था और कितनी सहृदयता से एक नए मामूली लेखक को पूरा सम्मान देते हुए कुछ सुझाव भी दिए थे। वह पत्र आज सुरक्षित रहा होता तो कितना आनंद आता? पर हुआ सो हुआ।

पत्र सुरक्षित न रहने का दुख तो हुआ ही, एक और महा कष्टकारक दुख: हो गया। जोधपुर से एक अनियतकालीन पत्रिका निकलती थी। **'विवेक'** । इसके संपादक **रामचंद्र बोड़ा** थे। **एम.एन.राय** के भक्त थे। जोधपुर के **स्टेडियम'** नाम के सिनेमाघर में बम विस्फोट कर जेल जा चुके थे, इस कारण स्वतंत्रता सेनानी थे। दार्शनिक दृष्टि से तर्क-वितर्क में निष्णात थे। वे **लोहावट** गाँव आए, जहाँ मैं जोधपुर से ट्रांसफर होकर आया हुआ था। वे इन दिनों **'टाइम्स ऑफ इंडिया'** के संवाददाता थे। कैमरा लिए गाँवों में निकल जाते थे, **लोहावट** भी आए। उनको मैंने लेख बताया, **'नया पथ'** की बात भी बतायी। वे बोले 'मैं छापूंगा **'विवेक'** में और ले गए मेरा लेख। छप गया होता तो बात और होती। न वह लेख छपा, न मुझे वापस मिला और न मेरे पास उसकी प्रतिलिपि रही। मैं कंगाल हो गया। इन घावों को सहला रहा हूँ, आज आधी सदी से भी ऊपर बीत जाने के बाद भी। यह कहानी है **यशपाल** पर मेरी मेहनत की और मेहनत के परिणाम पर पानी फिर जाने की।

एक कहानी पुस्तक खोज की। जैसे 70-72 वर्ष से बिछुड़ी पुस्तक का अनुसंधान हो रहा हो। जयपुर गया था एक शादी समारोह में दिल्ली के प्रसिद्ध नाट्यकर्मी **वागीश कुमार सिंह** मिल गए अपनी पुत्री **हरिप्रिया** के साथ जिसे वे **'चिया'** को देखा तो मुझे मेरे बचपन की एक पुस्तक याद आई **चियां मियां और हम साहब।** दूसरी यात्रा में मैं उस पुस्तक को ढूंढ कर, उसकी फोटोकॉपी कराके दिल्ली ले गया और भेंट कर आया। **'चिया'** बेटी मिली तो मुझे वह पुस्तक याद आयी और इस बार **'चल मेरी ढोलकी ढमाक ढम'** पुस्तक का उल्लेख कर मैं उन जैसी अन्य कई बाल-पोथियों को पढ़ने (1936-37) के बाद जिस बड़ी पुस्तक को पढ़ने लगा था (1938-39), उस पुस्तक में पढ़ी एक रोचक छंद की एक-दो पंक्ति सुनाई **''धान धमाका धम्मक धू''** और गाँव फलोदी लौटा तो पूरी चारों पंक्तियाँ मुझे याद आ गयीं –

धान धमाका धम्मक धूं
छाज छपाटा छप्पट छूं
खाद खदब्बद खूं
साड़ सड़ब्बड़ सड़बड़ सूं

मैंने उन्हें तत्काल पत्र लिखा, ये सभी पंक्तियाँ लिखीं और इन पंक्तियों के पीछे की

पृष्ठभूमि देकर अर्थ भी लिख दिया कि पता करें यह कविता किस पुस्तक में रही होगी।

उनको लिख तो दिया किंतु मेरा मन 'खदबद' करता रहा कि मोटी-सी किताब थी, कई कहानियाँ थी, यह शुरू में ही पहली या दूसरी कहानी थी, बाएं पेज पर ऊपर की तरफ़ कविता की तरह ही छपी थी, क्या नाम था-क्या नाम था और मुझे नाम याद आ गया **'मनमोदक'**। मैंने तीसरे ही दिन **वागीश कुमार सिंह** को लिख दिया- 'यूरेका', मिल गया-मिल गया, पुस्तक का नाम मिल गया-**'मनमोदक।'** ढूँढों-ढूँढों, जानता होगा कोई **हरिकृष्ण देवसरे,** कोई **जयप्रकाश भारती** आदि। खोज शुरू हो गई है, जारी है।

यही पढ़ी हुई पुस्तक तो 72 वर्ष बाद याद आई है और अब उसकी खोज प्रारंभ हुई है। एक पुस्तक है **'पिगमेलियन इन द क्लास रूम'** जिसकी चर्चा, समीक्षा व प्रशंसा पढ़ी दुनियां की कई संबंधी पत्रिकाओं में, तो खोज की 'खदबद' मन में पच्चीस-तीस वर्ष चली। पुस्तक तो आज तक नहीं मिली पर उसकी 'भूमिका' लंदन की लाइब्रेरी से मुझे फोटोस्टेट प्राप्त हुई और मैं तृप्त हुआ।

इन दिनों एक पुस्तक को चार-पाँच वर्ष की खोज के बाद मैंने पाया है। उसकी भी कहानी सुनाता हूँ। कहानी छोटी है, पर बहुत रोचक है। **अंतोनियो ग्राम्शी** की एक पुस्तक है। **'साहित्य संस्कृति और विचारधारा'** जिसका अनुवाद किया था **रामनिहाल गुंजन** ने और मैंने उसका आकर्षक उल्लेख किसी संदर्भ में कहीं पढ़ा था। भूल गया कि कहाँ पढ़ा था किंतु पुस्तक याद रही और उसे पढ़ने की इच्छा मन में पांव जमाकर बैठ गई। प्रकाशक (शारदा प्रकाशन, इलाहाबाद) याद रहा। इनको पत्र लिखा। नहीं उत्तर आया तो दिल्ली के एक नामी प्रकाशक को लिखा जो किसी भी प्रकाशक की पुस्तक का नाम दो, पुस्तकें सप्लाई कर दिया करता है। की थीं हमें पहले भी, परिचित भी था लेकिन नहीं कर सका। जयपुर के दो प्रकाशकों-पुस्तक विक्रेताओं से कहा, बीकानेर के एक घनिष्ठ मित्र प्रकाशक-पुस्तक विक्रेता से कहा, वे भी नहीं मँगा सके। संयोग से यह दर्द अपने पुराने सहपाठी और कवि-संपादक को जोधपुर लिख दिया। था तो पत्र निहायत निजी, 'तू' कर के लिखा हुआ लेकिन उसने प्रेम से उसे अपनी साहित्यिक पत्रिका **'प्रतिश्रुति'** में छाप दिया। संयोग ऐसा बना कि वह पढ़ लिया **रामनिहाल गुंजन ने आरा (बिहार)** में। इलाहाबाद, दिल्ली, जयपुर और बीकानेर के बाद जोधपुर में लिखी मेरी एक पुस्तक के प्यास की यह व्यथा-कथा **आरा (बिहार)** पहुँच गई। **'गुंजन'** जी का पत्र आया कि वे ही उस पुस्तक के अनुवादक हैं और उनके पास बची इसकी एक अतिरिक्त प्रति अमुक मूल्य पर देने को वे तैयार हैं। उन्होंने मेरी अभिलाषा और अधीरता की तीव्रता भांप ली थी। मैंने अविलंब एम.ओ. कर दिया और **'प्रतिश्रुति'** संपादक **मरूधर 'मृदुल'** तथा पुस्तक अनुवाद **रामनिहाल 'गुंजन'** के सद्भाव व सद्प्रयत्नों से मुझे वह पुस्तक प्राप्त हो गई। प्रकाशन 1992 का है और पृष्ठ संख्या 106 है।

अब तो मेरे पास **ग्राम्शी** की एक नहीं दो किताबें हो गई हैं-एक तो **'गुंजन'** जी का

अनुवाद ही है, दूसरी पुस्तक मिल गयी **'सांस्कृतिक और राजनैतिक चिंतन के बुनियादी सरोकार'** जिसके अनुवादक हैं **कृष्णकांत मिश्र,** प्रकाशक हैं ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली और हिंदी संस्करण का प्रकाशन वर्ष है 2002 तथा अँग्रेज़ी संस्करण का प्रकाशन था 1970 का।

किसी को गहराई से पढ़ने की इच्छा होती है तो खोज जारी रहती है। एक और पुस्तक मिली **'थिंकर्स ऑन एजुकेशन यूनेस्को'** की। इसमें दुनिया के सौ श्रेष्ठ शिक्षाविद्ों के कार्य का विशद विवेचन है और उसके चार भाग हैं। चारों मैं ले आया। उसके दूसरे भाग में **ग्राम्शी** मिल गया। शिक्षा संबंधी उनके चिंतन पर विशेष बल देते हुए एक बहुत अच्छा अध्याय है। समझने का प्रयत्न जारी है। ये पुस्तकें मेरी मदद करेंगी।

स्कूल जाता तो स्कूल पुस्तकालय से पुस्तकें ले आता। पिताजी वहीं शिक्षक थे और पुस्तकालय प्रभारी शिक्षक ने मुझे कभी पुस्तक देने से मना नहीं किया। वहाँ पढ़ी पहली पुस्तक **'दूध बताशा'** थी। बाकी कुछ नाम हैं-**'शरारती सार्क' 'तीन टिकट महा विकट', 'चियां मियां और हम सब',तीन,भालू,चल मेरी ढोलकी ढमाक ढम।**

गिजु भाई को मैं शिक्षा के क्षेत्र में सबसे ऊँचा उदाहरण मानता हूँ। उन्हें पढ़ने कि प्रेरणा मिली मुझे **लोहावत** में । **लोहावत** विद्यालय में एक मासिक पत्रिका आया करती थी **'शिक्षण पत्रिका'**, संपादक थे **गिजु भाई बधेका।** मूल संस्करण गुजराती था। हिंदी संस्करण का संपादन करते थे **काशीनाथजी त्रिवेदी।** यही **काशीनाथजी** कालांतर में मध्य प्रदेश के शिक्षा मंत्री भी रहे और जीवन के संध्याकाल में **कुंदनमलजी वैद** (मोंन्तेस्सोरी-बाल- शिक्षण-समिति के अध्यक्ष) के निमंत्रण पर **राजलदेसर** आकर बैठे और **रामनरेशजी सोनी** के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर **गिजुभाई** की शिक्षा संबंधी तमाम 17 पुस्तकों को छाप डाला। पाँचवीं में मैं फलोदी आ गया। पाँचवीं से सातवीं तक मैंने **प्रेमचंद** पढ़ा, **बच्चन, मैथिलीशरण गुप्त** आदि पढ़े, साथ ही **बालक, बालसखा** और **चुन्नू-चन्नू** नाम की प्रसिद्ध बाल-पत्रिकाएँ भी पढ़ी। इस दौरान मैंने तीन तरह की पुस्तकें पढ़ी-दो तरह की गुपचुप गोपनीय तरीके से और एक तरह की खुल्लम-खुल्ला। मेरे हिंदी शिक्षक गहरे साहित्य-प्रेमी थे। वे क्लास में ही पूरी **मधुशाला** गा-गा कर सुना दिया करते थे। कानपुर के थे। हम उन्हें पंडितजी कहते थे। **बच्चन** की तर्ज़ सरल थी। वे उसी तर्ज़ में सुना देते थे जिस तर्ज़ में **बच्चन** ने उसे गाया था या अमिताभ आज उसे सुनाते हैं। गुप्तजी कि **भारत-भारती** का कोई अंश रोज़ सुनाया करते। घर पढ़ने के लिए **प्रेम पच्चीसी** आदि दिया करते। एक दिन उन्होंने विशेष प्रशंसा कर **रंग-भूमि** उपन्यास का मोटा पोथा दे दिया। दे दिया तो मैंने पढ़ भी लिया।

दसवीं करते ही **राहुल** की छोटी-सी पुस्तिका पढ़ी **तुम्हारी क्षय** और मेरा जीवन ही बदल गया। फिर तो ब्राह्मण की निशानी जो लंबी चोटी सिर में रहा करती थी वह बराबर हो गयी, यज्ञोपवीत खूंटी पर टंग गया और **गीता-रामायण** बार-बार पढ़ने

की बजाय उन्हें एक और रखा और **यशपाल, जूलियस, फूचिक, कृशन चंदर, मैक्सिम गोर्की** पढ़ने लगा। यह भीषण परिवर्तन आया राहुल की एक पुस्तक से। **वोल्गा से गंगा, दर्शन दिग्दर्शन, भागो नहीं दुनिया को बदलो** आदि भी पढ़े। **प्रेमचंद, गांधी** और **गिजुभाई** को तो पहले से ही पढ़ता आ रहा था, ये तो मुझे छुट्ठी में मिल चुके थे, अब और नई खिड़कियाँ खुल गईं। **राहुल** के **वैज्ञानिक भौतिकवाद** और **गोर्की** की **माँ** से जीवन में एक नया मोड़ आ गया। **मार्क्स एवं एंगेल्स** तो पढ़े ही, **हावर्ड फास्ट, रैल्फ फॉक्स** और **क्रिस्टोफर कॉडवेल भी पढ़ा। कबीर** और **तुलसी** भी पढ़ा। जब के.जी. सैयदीन की **एजूकेशनल फिलॉस.फी ऑव् इकबाल** पढ़ी तो **डॉ. शंभूलाल शर्मा** की **तुलसी का शिक्षा-दर्शन** भी पढ़ा। तुलसी पर **माताप्रसाद** और **वारात्रिकोव** आदि कइयों को पढ़ा, **कबीर** पर **हजारी प्रसार द्विवेदी, शुकदेव सिंह** व **धर्मवीर** के विविध विचारों को पढ़ा तो आजकल **पुरुषोत्तम अग्रवाल** के लंबे अनुसंधान की उपज उनकी **कबीर** पर आई नई किताब को पढ़ने का मन बना रहा हूँ, **विष्णु चंद्र शर्मा** की **कबीर की डायरी** पढ़ रहा हूँ तथा पिछले दिनों उनसे जो बात हुई **डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी** की डी.डी. भारती पर, उसके प्रकाश में कई देशज अनजाने शब्दों पर विचार करता जा रहा हूँ। जैसे **पुतरिया** शब्द का प्रयोग और पृष्ठभूमि **कबीर** की रचनाओं में और ठेठ बनारस की गलियों में।

पुस्तक-प्रेम अंकुरित होने में कई मुकाम आते हैं। हर मुकाम पर रूचियां नयी बनती हैं या पिछली जो थीं वे फिर से सुदृढ़ होती हैं। एक नया आत्मविश्वास जागृत होता है और भाषा पर पकड़ भी मजबूत होती है। शब्दों के पीछे छिपे आशय- अभिप्राय भी अपने कई-कई रंगों के साथ स्पष्ट होने लगते हैं। पढ़ते-पढ़ते एक और काम भी साथ-साथ होता चलता है कि हमारे आचार-विचार भी आगे बढ़ते चलते हैं। दृष्टि में परिवर्तन होता है, दिशाएं भी बदल जाती हैं। कभी-कभी तो एकदम उल्टी घूम जाती हैं।

मुल्कराज आनंद के सभी कहानी संग्रह और उपन्यास पढ़ डाले। **आर. के. नारायण** की भी कहानियाँ व उपन्यास पढ़े। **मालगुडी,** टी.वी. धारावाहिक तथा **गाइड** फिल्म से पुरानी यादें ताजा हुईं। जब से **रामविलास जी, वात्स्यायन जी** को पढ़ा तब से मैं बहुत परेशान रहने लगा। मुझे दोनों प्रिय थे। प्रगतिवादी दृष्टि से **रामविलास जी** का भक्त और सृजनात्मकता, विवेकपूर्ण चिंतन व अभिव्यक्ति के नित नए आयाम-कविता, कहानी, उपन्यास, यात्रा व निबंध, सब कुछ-नित नए सार्थक मौलिक प्रयोग को देख-रेख **अज्ञेय** प्रिय लगते थे। खूब पढ़ा दोनों को। **प्रकाशचंद गुप्त** तथा **शिवदान सिंह चौहान** को भी पढ़ा। **जैनेंद्र** लुभाते थे, कभी-कभी आकर्षित भी करते थे। ऊँचाई थी विचार और भाषा की। दार्शनिक अंदाज उनके प्रति सम्मान जगाता था। **देवेन्द्र सत्यार्थी** को तो मैं पढ़कर झूम गया। **बाजतआवे ढोल** पढ़कर मेरे अंग-अंग में ढ़ोल बजा करते थे। **आजकल** और **विश्वदर्शन** का मैं पाठक था और **सत्यार्थी जी**

का **प्रेम-प्रशंसक।** लोकगीतों में रूचि उनके कारण ही पैदा हुई।

रसूल हमजातोव की पुस्तक **मेरा दागिस्तान** कई बार खरीदी और हर बार जो मांग कर ले गया वह वापस नहीं लाया। अब बाहर ड्राइंगरूम की पुस्तकों में उसे नहीं रखता। **अज्ञेय** की पुस्तकें भी मैं गोदरेज में रखता हूँ। और भी कई हैं जो भीतरी प्रकोष्ठ में हैं, प्राणों से प्यारी हैं जैसे **तसलीमा नसरीन** की **औरत के हक में। फैज, निर्मल वर्मा, केदारनाथ सिंह, त्रिलोचन, नागार्जुन, मंगलेश डबराल और पाश** आदि कई हैं जिनकी पुस्तकें भीतर जाती हैं तो कभी बाहर आ जाती हैं।

एक पुस्तक की जब से चर्चा पढ़ी है तब से उस पुस्तक **समरहिल — फॉर एंड अगेंस्ट** को पढ़ने की उत्कृत इच्छा मन में है। नहीं मिली, नहीं पढ़ी। हर पुस्तक शिक्षा और साहित्य की जो मुझे आकर्षित करती है पढ़ लेना चाहता हूँ। लिखता कम हूँ, पढ़ता ज़्यादा हूँ। पढ़ने की हसरत बनी रहती है। ऐसी कि हर हसरत पर दम निकले। बहुत पढ़ा। बहुत निकले मेरे अरमान फिर भी कम निकले। **पी.सी.जोशी** के गहरे अनुभव व विश्लेषण-विवेचन वाले लेख तद्भव में खूब पढ़ता रहता हूँ । उनकी इन निबंधों की पुस्तक भी आ गयी है। जरूर पढूंगा।

शुद्ध शिक्षा पर भारत में **गिजुभाई** ने कभी बहुत लिखा था, पश्चिम में **रूसो, पेस्तोलजी कमनियस, जॉन ड्यूई, मारिया मोंतेस्सोरी** आदि ने नाम कमाया। अब **जॉन होल्ट** सबसे अधिक पढ़े जा रहे हैं। **हाऊ चिल्ड्रन फेल** शिक्षा में इनका आधुनिक क्लैसिक है। हिंदी में इसका अनुवाद **अरविंद गुप्ता** ने किया है जो **एकलव्य** में उपलब्ध है। नाम है-**बच्चे असफल** कैसे होते हैं। **जोनाथन कोजोल, नॉर्मन फ्रीडमन, रॉबर्ट हचिंज, हेनरी स्टील कमेजर** ने भी नए विचार दिए। शिक्षा पर भारत में **कृष्ण कुमार** अपने अलग ढंग के मौलिक चिंतक हैं। हिंदी में **कृष्ण कुमार** की **राज, समाज और शिक्षा, विचार का डर, शिक्षा और ज्ञान** आदि सबसे अधिक चर्चित किताबें हैं। इनकी कुछ किताबें अँग्रेज़ी में भी हैं। प्रेरक हैं, विचारोत्तेजक है। **दयालचंद्र सोनी** ने कुछ बहुत ही महत्त्वपूर्ण किताबें लिखी हैं। **रोहित धनकर** की **शिक्षा और समाज** तथा **राजाराम भादू** की **डैविड आर्सबरो और नीलबाग स्कूल** भी नए विचार और नए प्रयोगों के लिए बहुत काम की है। **रमेश दवे** और **रमेश थानवी** ने भी शिक्षा, परीक्षा व नवचिंतन पर काफ़ी गहरे विचार किया है।

ये सब लेखक शिक्षा में प्रतिपक्ष को भी देखते हैं। किन्तु धूम-धड़ाके से बुलंद आवाज में वर्तमान शिक्षा-नीतियों पर हमला करने वाला तथा साथ ही रचनात्मक दृष्टि से होशंगाबाद विज्ञान, जैसा धरती से जुड़ा गाँवों के बच्चों के लिए गाँवों में उपलब्ध साधनों के माध्यम से ही विज्ञान-शिक्षण का विशाल पैमाने पर प्रयोग कर एक नया आदर्श उपस्थित करने वाला प्रखर प्रबुद्ध लेखक कोई है तो **अनिल सद्गोपाल** है। माता-पिता या शिक्षक या कोई भी शिक्षा-प्रेमी, जो शिक्षा के मौलिक विकास में रूचि रखता हो उसे गिजुभाई के बाद इन्हें ज़रूर पढ़ना चाहिए। **शिक्षा के बदलाव का अधिकार** (ग्रंथशिल्पी) इनकी प्रसिद्ध पुस्तक है।

नंदकिशोर आचार्य है तों कवि, आलोचक और गांधीवादी चिंतक परंतु शिक्षा में भी अच्छी रूचि रखते हैं। कविता संग्रहों व आलोचना ग्रंथों के साथ शिक्षा पर भी इनकी **आधुनिक विचार और शिक्षा** आदि कई पुस्तकें हैं। अभी मैं इनकी **लेखक की साहित्यिकी** (वाणी) और **शिक्षा का सत्याग्रह** (वाग्देवी) पढ़ रहा हूँ।

शिक्षा और सहित्य की कई पुस्तकें हैं जो पढ़ी हैं और पढ़ता रहता हूँ। अधिक नाम गिनाने से क्या लाभ? अमेरिकी राजनीति में प्रमुख प्रतिरोधी प्रबुद्ध स्वर **नोम चाम्सकी** को भी और अंतरिक्ष विज्ञान में कुलांचें भरने वाले महाअपंग वैज्ञानिक **स्टीफ़न हाकिंज** को थोड़ा पढ़ने-समझने की चेष्टा की है। कला और संगीत में भी रूचि रही है। **मुल्कराज आनंद** की **मार्ग** (अँग्रेंज़ी पत्रिका, भव्य कागज़-मुद्रण व भव्य सामग्री की) के कई अंक मंगाए, पढ़े थे 60-62 में। और **मुल्कराज** की सौंदर्य-बोध और कला की सृजनात्मकता समझाने वाली एक पुस्तक खरीदी थी, पढ़ी थी। **हर्बर्ट रीड** का **क्लासिक ग्रंथ** भी थोड़ा पढ़ा, **डिक्शनरी ऑव् आर्ट** भी खरीदी और देश के प्रसिद्ध चित्रकारों पर **नंदलाल बोस** से **पूजा** तक जो मिला पढ़ा। **एम.एफ. हुसैन** तो निकट संबंधी जैसे लगते हैं। उनकी खूब चित्रकारी देखी और उनकी आत्मकथा भी पढ़ी।

संगीत पर दो किताबें मुझे सबसे अच्छी लगीं। दोनों की लेखिका हैं, **श्रीमती शीला धर।** किताबें हैं– **द कुकिंग ऑव् म्यूजिक** तथा **ह्वेयर इज समवन आइ वुड लाइक यू टु मीट (पर्मानेंट ब्लैक, वितरक-ओरियंट लौंगमैन)**। संगीत में रूचि वालों को ये मिल जाएं तो इनमें उन्हें संगीत संसार के अभूतपूर्व दृश्य देखने को मिलेंगे, अद्‌भुत अनुभव और आनंद देंगी ये पुस्तकें।

बांग्ला कविताएँ **शक्ति चट्टोपाध्याय, शंख घोष, रवींद्रनाथ टैगोर, नजरूल इस्लाम** और **सुनील गंगोपाध्याय** की मुझे बहुत प्रिय हैं। गुजराती कवि **सुरेश दलाल** की कविताएँ और **जोसेफ मकवान** का उपन्यास **आंगलियात** मैं बार-बार पढ़ना चाहता हूँ। **कार्डियोग्राम** (ललित निबंध) के रचयिता गुजराती के प्रसिद्ध स्तंभ लेखक और पंचशील आंदोलन के प्रवर्तक, शिक्षक और शिक्षाविद् **गुणवंत शाह** आजकल एक खास दल के समर्थन में उतर जाने के कारण काफी विवाद में हैं, किंतु उनके कई गुजराती ग्रंथों में से **गीता** पर एक ग्रंथ **कृष्ण नुं जीवन संगीत** मुझे बहुत अच्छा लगा, संभाल कर रखा है।

पुस्तकों की दुनिया कितनी आनंददायक और कितनी ज्ञानवर्धक है यह पढ़ने वाला ही जानता है। पुस्तकें पढ़ते हैं तो हमें दृष्टि मिलती है। पुस्तकों में वह सब कुछ है जो समय में है, समाज में है, परंपरा में है और परिवेश में है। साहित्य को इसीलिए समाज का दर्पण कहा है। असल में सहित्य की भूमिका दर्पण से भी बहुत आगे है। नये मुहावरे में कहें तो कैमरे से भी बहुत आगे है। इसीलिए हमारे मन में यह प्रश्न उठा है कि किताब कैमरा है कि आँख? कैमरा उसे ही देखता है जो सामने है, जबकि आँख जो सामने है उसे तो सभी आयामों में देखती ही है, वह उसके भीतर भी देखती है

और उसके आगे **उस पार** भी देखती है। किताब की आँख से हम **क्रांतिदर्शी** बनते हैं। **उस पार** को देखने वाले हम पुस्तक पढ़े तो हम जहां होते हैं निश्चित ही इससे आगे जाते हैं। समझता वही है जो समझने के प्रति जागरूक रहता है। जागरूकता भी पुस्तक ही लाती है, ध्यान दें तो। जिसका ध्यान लगता है गीत-संगीत-काव्य-कला-साहित्य में, उसको रस आने लगता है। उसकी शिक्षा होने लगती है। जब शिक्षा होती है तो रस की पहचान बनती है। रस की पहचान हमें ज्ञान-विज्ञान की ओर ले जाती है, पारंगत बनाती है? यही पुस्तक-प्रेमी की अनिर्वचन सुंदर परिणति है।

❑❑❑